International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वागड़ अंचल के जनजातीय समाज में प्रचलित सामाजिक परंपराओं का अध्ययन

डॉ. गणेश लाल निनामा[1], डॉ. योगिता निनामा[2]

[1]प्रोफेसर-हिन्दी, एस. बी. पी. राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर (राजस्थान)
[2]सह आचार्य-प्राणीशास्त्र, एस. बी. पी. राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर (राजस्थान)

सार

भारतीय समाज सामाजिक परंपराओं का सुंदर उदाहरण है। सामाजिक व्यवस्था मनुष्य में साथ में रहने के लिए प्रेम व भाईचारा बढ़ाती है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से वागड़ अंचल जनजाति बहुल है जिसमें भील, मीणा, डामोर एवं गरासिया आदि जातियां पाई जाती है। यदि हम आदिवासी समाज की सामाजिक परंपराओं को देखते है तो हमें पता चलता है कि यह समाज भले ही आर्थिक व शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ हो परंतु इस समाज में रची बसी सामाजिक परंपराएं उसे श्रेष्ठ बनाती है। नातरा, नोतरा, हलमा, पामणा, वार, हाट व खेती-बाड़ी जैसी सामाजिक परंपराएं उन्हें प्राकृतिक वातावरण में जीवन-यापन करने के लिए मजबूत बनाती है। जनजातियों का विषमता पूर्ण जीवन आपस में मेल-जोल से उल्लासमय व मनोरंजक बन जाता है। आदिवासी समाज की इन्हीं परंपराओं को लोक जीवन में रस धारा बरसाते हुए अभिव्यक्त होते देखा जा सकता है।

कीवर्ड: नातरा, नोतरा, हलमा, पामणा, वार, हाट व खेती-बाड़ी

परिचय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य से ही परिवार, समुदाय और विभिन्न प्रकार की संस्थाएं निर्मित होती है। इनसे ही विभिन्न सामाजिक लोक परंपराओं की अभिव्यक्ति होती है। ये परंपराएं लोक जीवन की मान्यताओं, आस्थाओं के साथ-साथ उसकी ऊर्जा का भी संकेत देती है। किसी भी समाज की संस्कृति और सभ्यता की परिचायक उसके रीति-रिवाज होते हैं, जिनमें पारस्परिक सहयोग की भावना और कामना सदा विकसित होती रहती है। जनजाति समाज के परंपरागत रीति-रिवाजों में प्रकृति के कोमल और कठोर

रूप प्रतिबिंबित हैं, लोक-देवताओं के प्रति अगाध श्रद्धा है, त्योहारों का आमोद-प्रमोद है, लोक-विश्वासों के रंगीन लुभावने चित्र हैं, लोक-गीतों के मधुर-स्वर की अनुगूंज है, रसीले नृत्यों की मनोहर थिरकन है, जीवन के सुख-दुख की कहानियां हैं एवं स्वजनों के प्रति अमिट स्नेह और अनुराग है।

आदिम जातियों का सामाजिक संगठन बड़ा शक्तिशाली, आदर्श और अनुकरणीय है। पाल तथा फला की सुव्यवस्था के लिए एक गमेती रहता है जो अपने संपूर्ण साथियों का पूरा ध्यान रखता है और समय-समय पर उनके कष्टों को अपना ही दुख-दर्द मानते हुए सुनता है और उन्हें दूर करने का पूरा प्रयत्न भी करता है। ये भील अपने गमेती (मुखिया) को पूरा आदर देते हैं और उनके आदेशों का पालन बिना किसी सोच-विचार के करते रहते हैं । इस सुंदर व्यवस्था को देखकर गोस्वामी तुलसी दास का यह दोहा याद आता है-

मुखिया मुख सो चाहिए खान-पान कहूं एक।
पालय-पोषण सकल अंग तुलसी सहित विवेक।।

जनजाति समाज की इन सारी विशेषताओं को वागड़ के जनजाति समाज में भी देखा जा सकता है। भीलों की सामाजिक संरचना सामुदायिक भावना एवं प्राथमिक संबंधों पर आधारित होने के कारण सुदृढ़ एवं एकता के सूत्र में बंधी हुई होती है। इनमें परस्पर सहानुभूति तथा सहयोग की भावना होती है। ये इसकी प्रतिष्ठा को स्वयं की प्रतिष्ठा समझ कर हर कीमत पर उसकी रक्षा व अभिवृद्धि के प्रयास करते हैं तथा समाज के रीति-रिवाजों से अंतरंग रूप से जुड़े बंधे हुए रहते हैं। इस समाज में कई रसीली परंपराएं पाई जाती है जिनको निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है -

सामाजिक परंपराएं

वागड़ के जनजाति समाज में भी अन्य जनजातियों की भांति सामाजिक परंपराएं पाई जाती हैं। वाग्वर अंचल के जनजातीय वर्ग की कुछ प्रमुख सामाजिक परंपराएं निम्न है -

1. नातरा:

"विवाह संबंधी एक उल्लेखनीय पहलू विधवा विवाह है। जिसे आदिवासी 'नातरा' कहते हैं, यदि कोई विधवा लड़की पुनर्विवाह करना चाहे तो उसका विवाह सामान्य दहेज की रकम अदा करके कर दिया जाता है। तलाक शुदा लड़की का विवाह भी 'नातरा' कहलाता है। वागड़ के जनजाति समाज में भी यह प्रथा सामान्य प्रचलन में पाई जाती है। इस समाज में 'नातरा' प्रथा तीन स्थितियों में संभव होती है एक तो कुंवारी लड़की किसी लड़के के साथ भाग जाने पर, दूसरी स्थिति में जब विधवा लड़की किसी लड़के के साथ पुनर्विवाह करती है, तथा तीसरी स्थिति तब बनती है जब तलाकशुदा लड़की विवाह करती है । जनजाति समाज में विवाह का यह एक प्रकार है इसमें लड़ाई-झगड़ों की संभावनाएं ज्यादा रहती है। इसलिए

आदिवासी इसे 'झगड़े वाली औरत' बोलते हैं तथा जब समाज के दोनों पक्षों के बीच समझौता होता है, जो गांव के मुखिया तथा भांजगडियों पर निर्भर रहता है। समाज के मुख्य लोग 'झगड़ा' तय करते हैं तथा नातरे की स्थिति देख कर शारीरिक, आर्थिक तथा सामाजिक दण्ड तय करते हैं जिसे दोषी परिवार को मानना पड़ता है । जब समझौता हो जाता है तब यह भी सामान्य विवाह की तरह मान्य हो जाता है।

2. नोतरा (निमंत्रण देना) प्रथा:

विवाह की सारी शर्तें पूर्ण कर लेने के पश्चात विवाह की तिथि निश्चित हो जाती है । भील जाति में गांव के मुखिया रावत एवं प्रमुख व्यक्तियों के द्वारा नोतरा गिराने की तिथि तय करने के बाद रिश्तेदारों, गांव वालों, मिलने वालों एवं इष्ट मित्रों आदि को निमंत्रण भेजा जाता है । वागड़ प्रदेश में यह प्रथा एक व्यवस्था के रूप में संपूर्ण जनजाति समाज में व्याप्त है। नोतरा प्रथा पुराने समय से चली आ रही एक सामाजिक सहयोग की व्यवस्था है। जो किसी भी आर्थिक समस्या से उबरने का अच्छा तरीका है। नोतरा अलग-अलग समय व परिस्थितियों में गिराया जाता है, बैल खरीदने, झगड़ा भरने तथा शादी करने के लिए । अधिकतर 'नोतरा' गरीब परिवारों का अपने समाज से सहयोग प्राप्त करने की व्यवस्था हैं, जिससे गरीब से गरीब व्यक्ति समाज के सहयोग से अच्छी तरह शादी कर लेता है। इस व्यवस्था के तहत बिना ब्याज के आर्थिक सहयोग प्राप्त किया जाता है। यह एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था है, जो जनजाति समाज के गरीब परिवारों के लिए वरदान तुल्य है। जनजाति समाज में नोतरा भेजने का तरीका भी सुनिश्चित है। 'नोतरा' के लिए विशिष्ट व्यक्ति को चावल देकर भेजा जाता है। वह कुछ दाने देकर शादी व नोतरा गिरने की तिथि की सूचना देता है। आजकल यह लिखित या मुद्रित पत्र के रूप में दिया जाने लगा है । नोतरा जिसको दिया जाता है, वह निश्चित समय व स्थान पर पहुंच कर नोतरा के रूप में नकद राशि, कपड़े, नारियल व अन्य वस्तुएं तिलक करके देता है । थाली के चारों तरफ बैठे समाजजनों में से कोई शिक्षित व्यक्ति नोतरे में दी गई राशि एवं वस्तुओं को रजिस्टर में लिखता रहता है, ताकि समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार उस व्यक्ति को वापस उसके नोतरे में लौटाया जा सके।

इस प्रकार नोतरा परस्पर सहयोग की एक अत्यधिक उपयोगी एवं लाभकारी प्रथा है। जिसे प्राचीन काल की सहकारी प्रथा भी कहा जा सकता है। यह लड़के व लड़की दोनों की शादी में भेजा जाता है। इससे एकत्रित होने वाले धन व सामग्री से विवाह में सहयोग मिलता है । नोतरा व्यक्ति की हैसियत के अनुसार दिया जाता है। जैसे 5, 21, 51, 101 या इससे भी अधिक। यहां यह उल्लेखनीय है की कितनी राशि नोतरा में डालनी चाहिए यह सब सामान्य रूप से जानते हैं । नोतरा डालने वाले को पूर्व में जितनी राशि प्राप्त हुई थी उससे कुछ बढ़ाकर राशि दी जाती है अर्थात नोतरा डालने वालों ने यदि उसे 51/- रूपये दिए थे तो अब उससे ज्यादा 101/- रुपए डालेगा। इस प्रकार गरीब आदमी भी आसानी से विवाह कर लेता है।

इसी से वह 'दापा', गहना व अन्य कार्य करता है। लेकिन आजकल यह प्रथा प्रतिस्पर्धा पैदा करने लगी है जिसमें गरीब अपने खेत गिरवी रख कर भी इस प्रथा का निर्वाह करते हैं जो उन्हें बर्बादी की ओर ले जा रही है । इस प्रकार सामाजिक संगठनों की ओर से उंगली उठने लगी है । सामाजिक संगठनों के द्वारा नियंत्रित यह प्रथा गरीब के लिए वरदान ही रहेगी।

3. हलमा:

राजस्थान के सुदूर दक्षिण में स्थित जनजाति बहुल वागड़ अंचल की एक विशिष्ट परंपरा है हलमा। भील जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथा के अनुसार पुत्र विवाह के बाद तुरंत माता-पिता से अलग रह कर नयी गृहस्थी शुरू करता है, उसके लिए पृथक घर की आवश्यकता होती है । समुदाय के सारे लोग मिल कर सहयोग से उसके लिए एक नए घर, जिसे स्थानीय भाषा में 'टापरा' कहते हैं, का निर्माण करते हैं। इस तरह सामुदायिक सहयोग से गृह निर्माण की यह सांस्कृतिक परंपरा 'हलमा' कहलाती है, जिसमें एक ओर पुत्र को स्वतंत्र, आत्म निर्भर और दायित्व पूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा है तो दूसरी ओर यह घनीभूत एहसास भी समय है, कि जिस नीड में उनके सपने परवान चढ़ते हैं उसका एक-एक तिनका परिजनों, पुरजनों एवं समाज के लोगों ने सहेजा और सजाया है। सामाजिक दायित्व उन्हें प्रतिपल बांधे हैं अपनी परिधि में, जिससे मुक्त नहीं हुआ जा सकता। व्यक्ति एवं समुदाय का या परस्पर शाश्वत संबंध हमारी संस्कृति का प्राण तत्व है, स्वतंत्र होने पर भी व्यक्ति समाज का हिस्सा है। टापरे की हर दीवार और छप्पर बांस और कवेलू (खपरैल) में सामुदायिक सद्भाव का स्नेह और व्यवस्था समाई रहती है। 'हलमों करवूं है (हलमा करना है) कि हांक पड़ी नहीं कि जुट गया सारा भील समुदाय और फिर घर बनाना हो या खेत जोतना या फिर कोई अन्य आयोजन-पारस्परिक सद्भाव का जो दृश्य दिखाई देता है वह अभिभूत कर देने वाला होता है ।

'हलमा' व्यवस्था इस समाज के लिए वरदान ही है कि किसी मुसीबत में फंसे व्यक्ति का काम समय पर हो जाता है। कृषि कार्यों में जैसे - जुताई के समय दूसरे व्यक्तियों को हल व बैल लेकर आने को बोलना पड़ता है वह व्यक्ति हल व बैल सहित आता है, तथा दिन भर जिसके यहां हलमा करने आया है वहां हल चलाते हैं। इसी प्रकार फसल कटाई भी की जाती है तथा मकान बनाने में भी इस व्यवस्था को उपयोग में लिया जाता है।

हलमा व्यवस्था में किसी को कुछ लेने देने की आवश्यकता नहीं रहती है क्योंकि ये परस्पर 'हांती' चढ़ा कर रखते हैं जब जरूरत पड़ती है तब बुला कर काम करा लेते हैं ।

4. पामणा

वागड़ अंचल में पामणा या मेहमान होने की अत्यधिक गौरवशाली परंपरा देखने को मिलती है। पामणा या मेहमान वार-त्योहारों पर होते हैं यह एक परंपरा बन गई है जो अलग-अलग त्योहारों व अवसरो के अनुसार होती है । पामणा अवधि पाहुन का समानार्थी शब्द है जो अतिथि सत्कार की विशेष परंपरा के रूप में रुढ़ हो गया है ।

पामणा विशेष कर होली, दीपावली तथा रक्षाबंधन के त्यौहार पर देखने को मिलता हैं। सब त्यौहार अपनी अलग पहचान रखते हैं । होली जनजाति समाज का सबसे प्रिय व उल्लास का त्यौहार माना जाता है इस अवसर पर फाल्गुन का माह रहता है जिसमें 'ढूंढ' के पामणा विशेष महत्व के होते हैं फाल्गुन पूरा महीना आदिवासियों के लिए मस्ती का होता है। इसमें वे कुछ नशे में मधुर धुन में फाल्गुनी गीत गाते, नृत्य करते हुए पावणे जाते हैं। इसमें गाली के गीत व अश्लील गीतों की भी परिपाटी देखने में आती है ।

दीपावली के अवसर पर नई-नवेली दुल्हन को लेने दूल्हे पक्ष के लोग मेहमान या पामणे जाते हैं तथा अपने रस्म-रिवाज से दुल्हन को लेकर आते हैं।

रक्षाबंधन एक ऐसा त्यौहार है जिसमें भाई को बहिन राखी बांधती है इस अवसर पर नई-नवेली दुल्हन अपने ससुराल में रहती है तब दुल्हन के भाई सहित गांव के अन्य बंधु दुल्हन के ससुराल अपनी बहिन को लेने मेहमान या पामणे जाते हैं तथा रस्म-रिवाज के साथ बहिन को लेकर अपने गांव आ जाते हैं। शोध प्रबंध के सर्वेक्षण क्रम में देवीलाल निनामा, कांतिलाल डामोर निवासी पीपलखूंट तहसील घाटोल जिला बांसवाड़ा तथा वजहींग मईडा कुशलगढ़ ने बताया कि होली पर्वोल्लास के मेहमान या पामणा विशेषकर आदिवासी समाज में प्रिय है क्योंकि इसमें हर चीज की छूट रहती है। खाना-पीना तथा गाना-बजाना, मस्त रहना इस अवसर की विशेषता है। यह बाल-किशोर से लेकर वृद्ध तथा बालिका से वृद्ध महिला तक का मस्ती व उल्लास का समय रहता है। आजकल सामाजिक संगठन परंपरा रुपी इस कुरीति पर प्रतिबंध लगाने लगे हैं क्योंकि ये संगठन मानते हैं कि आदिवासी समाज की गरीबी व बदहाली के जिम्मेदार ये गलत परंपराएं एवं कुरीतियां हैं। इतना होते हुए भी यह परंपरा जनजाति समाज में यथावत बनी हुई है। जिनका ध्यान मात्र व्यक्ति को रोमांचित कर देता है।

5. वार

वागड़ अंचल के जनजाति समाज में पारस्परिक सहयोग व सुरक्षा की भावना देखने को मिलती है। 'वार' शब्द एक सामूहिक सुरक्षा भाव की व्यंजना कराता है। आदिवासी समाज के गांव बिखरे हुए होते हैं तथा इनके मकान प्राय: दूर-दूर व अपने-अपने खेत में होते हैं। जिससे सुरक्षा की समस्या रहती है। लेकिन आदिवासी समाज में 'वार' एक सुदृढ सुरक्षा का प्रतीक है, क्योंकि चोरी आगजनी या आकस्मिक विपत्ति

में एक व्यक्ति, विशेष प्रकार की आवाज या ढोल देकर आस-पास के सम्पूर्ण गांवों को सूचना दे देता है जिससे सभी गांवों के लोग 'वार' के स्थान को ध्यान कर उस और अपने साधन-हथियार लेकर दौड़ते हैं। चोरी जैसी समस्या तो गांवों में नहीं के बराबर है, क्योंकि शातिर से शातिर चोर भी 'वार' के द्वारा पकड़े जाते हैं तथा क्रुद्ध आदिवासियों के द्वारा उनका क्या हश्र होता है ? यह तो हर कोई जानता है। कैसी भी विपत्ति में ये सहयोग देकर उस व्यक्ति की मदद करते हैं। इस तरह 'वार' एक सहयोग की अपील का नाम है। यह व्यवस्था प्राचीन समय में विशेष कर प्रचलित थी जिसमें समाज की घने वनों के हिंसक जानवरों व लुटेरों से सुरक्षा करनी पड़ती थी। जो आज तक परंपरा के रूप में आदिवासी समाज में मौजूद है।

6. हाट

वागड़ प्रदेश साप्ताहिक 'हाट' व्यवस्था के लिए भी प्रसिद्ध है जनजाति बहुल क्षेत्रों में साप्ताहिक हाट का आयोजन किया जाता है जिससे आस-पास गांवों के लोग अपनी उपज को बेच कर आवश्यक सामग्री खरीदते हैं। हाट व्यवस्था से उन्हें गाड़ी किराया व भाड़ा नहीं लगता है तथा अपनी आवश्यक सामग्री हाट में ही खरीद लेने से दूर बाजार में नहीं जाना पड़ता है।

जनजाति समाज के लोगों के पास छोटे-छोटे खेत होते हैं, तथा वे भी बिखरे हुए। उपर से वर्षा की अनियमितता से भी अकाल का सामना इन्हें हमेशा करना पड़ता है ऐसी स्थिति में इनकी छोटी मोटी उत्पादित उपज हाट बाजार में ही बिक जाती है। यह हाट प्राचीन विनिमय प्रणाली का सुंदर रूप है।

हाट एक नियमित व्यवस्था है जो सप्ताह में तय दिन को लगता है। जिसकी जानकारी आसपास के गांवों के लोगों को रहती है। बांसवाड़ा जिले के केसरपुरा, बांसवाड़ा, पृथ्वीपुरा में सोमवार को, घंटाली, आबापुरा में मंगलवार को, पीपलखूंट, दानपुर तथा प्रतापगढ़ में बुधवार को, केलामेला, अरनोद में गुरुवार को, घोड़ी तेजपुर में शुक्रवार को, सुहागपुर में शनिवार को तथा प्रतापगढ़, माही डैम, घाटोल में रविवार को साप्ताहिक हाट लगते हैं। सैकड़ो आदिवासी हाट में आते हैं तथा अपनी आवश्यक चीजें खरीदते हैं तथा कई लड़के व लड़कियां सिर्फ घूमने-फिरने के लिए आते हैं। हाट एक मिलन केंद्र भी है जिसमें आदिवासी समाज के युवक-युवतियां एक दूसरे को देखते तथा पसंद करते हैं।

वार त्योहारों के हाट विशेष देखने लायक होते हैं। जो बड़े ही मनोरंजनकारी व मनमोहक होते हैं, हाट एक अस्थाई बाजार व्यवस्था के साथ-साथ आदिवासी संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। यद्यपि वागड़ के कुछ हिस्सों में हारट व्यवस्था बंद करवा दी गई है, क्योंकि सामाजिक संगठन हाट व्यवस्था को आदिवासी समाज के शोषण का केंद्र मानते हैं तथा उनका मानना है कि हाट से ही कुरितियां तथा समाज में बुराइयां पनपती है। इसके बावजूद वागड़ के कुछ हिस्सों में 'हाट' अपनी यथावत स्थिति में जनजातीय संस्कृति

का दिग्दर्शन कराते हैं। आदिवासी समाज में कई कार्यो को 'हाट' में ही संपन्न किया जाता है जैसे - झगड़ों का निपटारा, लाड़ी पकड़ना, लड़की-लड़का देखना-दिखाना, सगाई की बात करना आदि।
'हाट' विशेषकर युवाओं के लिए उल्लास व उमंग का स्थल है। क्योंकि हर युवा लड़का-लड़की अपने लिए रुपवान जोड़ा ढूंढते है। इस प्रकार 'हाट' कई रीति-रिवाजों व परंपराओं का संगम स्थल है।

7. खेती-बाड़ी

'वागड़ अंचल का जनजाति समाज पूर्ण रूपेण कृषि पर आधारित है। परिवार के अधिकांश सदस्यों का रोजगार कृषि है। सर्वेक्षण के आधार पर अनुमानतः 56.40 प्रतिशत भील जाति कृषि पर आधारित है तथा कुल 72 प्रतिशत लोग कृषि पर अपना जीवन यापन करते हैं। इनकी मुख्य उपज चावल है तथा माही, कडाणा व जाखम बांधों के बन जाने पर डूंगरपुर, बांसवाड़ा तथा धरियावद के भीलों की स्थिति में सुधार आया है। अब ये गेहूं, सरसों, जौ, चना बोने लगे हैं। जहां नहरों की सुविधा है वहां के भीलों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। परंतु जहां सिंचाई के साधन नहीं है वहां भील पूरा परिश्रम करके भी अपना जीवन-यापन नहीं कर पाते हैं। फलत: फसल के समय के अलावा ये मजदूरी करके अपना पेट पालते हैं। वर्ष 2022 के सर्वेक्षण के अनुसार मजदूरों की संख्या 86 प्रतिशत पाई गई है। शहरी व कस्बों में निवास करने वाले कृषि मजदूरों की संख्या 3.5 प्रतिशत व कृषकों की संख्या 6.30 प्रतिशत है। इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से गांव के भील कृषि उपज प्पर अधिक निर्भर है, परंतु अशिक्षा के कारण कृषि की नवीन तकनीकी के ज्ञान का अभाव रहा है। अशिक्षित होने के कारण ही भील कृषि से संबंधित औजार व बीज आदि का भी उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। फलत: इनकी कृषि उपज बहुत कम होती है। जिससे वे अपना गुजारा भी नहीं कर पाते हैं। आदिवासी समाज में कहीं-कहीं पानी उपलब्ध होने पर फल-फूल सब्जी की बाड़ी लगाने की परंपरा है जिसमें वे अपने लिए आवश्यक चीजें उगाते हैं। हरी मिर्च, सब्जी तथा फूल अपनी ही बाड़ी से प्राप्त करते हैं। जहां पर कुएं हैं वहां छोटी सी सब्जी की बाड़ी जरूर देखने को मिलती है । आजकल वागड़ के जनजाति समाज में ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आकाशवाणी केंद्र, बांसवाड़ा तथा बोरवट कृषि अनुसंधान केंद्र बांसवाड़ा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र फ्लोज, डूंगरपुर से भी कृषि संबंधित जानकारी दी जा रही है तथा जनजातीय कृषिकों में जागरूकता लाई जा रही है, फिर भी यह अपर्याप्त ही है।

परिणाम

साथ मिलकर किए गए काम से परिणाम बहुत संतोषजनक व सफल होते है। सामाजिक परंपराओं का मुख्य उद्देश्य यहीं होता है कि कोई भी काम जैसे घर बनाना, कुआं खोदना, खेती-बाड़ी, विवाह या आर्थिक

समस्या हो तो सभी मिलकर कार्य करते है जिससे किसी परिवार को समस्या को नहीं झेलना पड़े। कर्ज लेकर ब्याज भरने से अच्छा नोतरा गिराना है, जो समयानुसार भर दिया जाता है। आधुनिक समय में हलमा परंपरा से पानी के स्रोतों का निर्माण आदिवासी समाज को अग्रिम पंक्ति में लाता है।

निष्कर्ष

जनजाति समाज की सामाजिक परम्पराएं समाज को जोड़ने के लिए बनी हुई है। इन परंपराओं के बिना समाज सुदृढ नहीं हो सकता है। नोतरा परंपरा सभी सगे-संबधियों को एक छत के नीचे लाकर आर्थिक सहयोग के लिए प्रेरित करती है, साथ ही समाजहित में सबको विचार-विमर्श के लिए एक जाज़म पर एकत्रित करती है। वहीं हलमा परंपरा किसी भी मुसीबत से बचाती है। नातरा प्रथा महिला सशक्तिकरण का अन्य समाजों के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। कपास, चावल और अन्य फसलों की खेती बाड़ी में सामूहिक कार्य आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है। अतः आर्थिक व शैक्षणिक उन्नति के साथ आदिवासी समाज को अपनी सामाजिक परम्पराओं को संरक्षित रखने की महती आवश्यकता है।

संदर्भ

1. डॉ. सी. एल. शर्मा, भील समाज-कला एवं संस्कृति
2. डॉ महेंद्र भाणावत, कुंवारे देश के आदिवासी
3. डॉ मालिनी काले, भील संगीत और विवेचन
4. रामचंद्र पलात, राजस्थान की वनविहारी जन जातियां
5. डॉ सुंदरलाल शर्मा, दक्षिणी राजस्थान की जनजाति (संस्कृति, लोक, गीत एवं लोक नृत्य)